रोशनलाल - 10

बी.ए. I HRB

रश्मिरथी

कथावस्तु

पंचम सर्ग

जब कृष्ण के समझाने पर कर्ण नहीं माना और वह पाण्डवों के पक्ष में आने को तैयार नहीं हुआ, तब वही प्रस्ताव लेकर कुन्ती उसके पास गयी। कुन्ती को कर्ण के समक्ष जाकर उसे पुत्र कहकर पुकारने का साहस नहीं था। वह प्रतिदिन सोचती थी कि अब कर्ण को सब कुछ बताये बिना काम नहीं चलेगा; किन्तु, कर्ण की ओर जाने का उसे साहस नहीं होता था। आखिरकार जब युद्धारम्भ को मात्र एक दिन रह गया, तब वह सारी शक्ति समेट कर कर्ण के पास गयी और बोली कि 'तू मेरा बेटा और पाण्डवों का भाई है, अतएव इस युद्ध में इन्हीं का नेता बन।' कर्ण ने कुन्ती को उससे भी कड़ा उत्तर दिया, जैसा उसने भगवान कृष्ण को दिया था। कुन्ती बेचारी निरुत्तर हो गयी और यह कहकर जाने लगी कि 'सुनती थी कि तू बड़ा ही दानी है, किन्तु आज माता को ही भीख नहीं मिली।' यह सुनते ही कर्ण का वीर-हृदय द्रवित हो गया और उसने कहा कि 'यदि मेरे द्वार से कोई खाली हाथ नहीं जाता है, तो तुम भी निराश नहीं जाओगी। लो, मैं तुम्हें वचन देता हूँ कि अर्जुन के सिवा अन्य पाण्डवों को हाथ आया पाकर भी मैं उनका वध नहीं करूँगा। हाँ, अर्जुन हाथ आया तो उसे जीवित छोड़ना मेरे वश की बात नहीं है।'

कुन्ती बोली 'यह दान भी कोई दान है? मैं छह बेटों की माता बनने को आयी थी, सो अब पाँच भी नहीं रहे, केवल चार बेटों की

माता बनकर वापस जा रही हूँ' इस पर कर्ण भावुकता में आ गया और बोला, 'छह और चार का हिसाब गलत है माँ, तुम जब तक जिओगी, पाँच बेटों की माता बनी रहोगी। इस युद्ध में यदि अर्जुन ने मुझे मार डाला तो पाँचों पाण्डव ज्यों-के-त्यों बने ही रहेंगे। हाँ, यदि अर्जुन मरा और विजय दुर्योधन की हुई, तो मैं दुर्योधन का पक्ष छोड़कर तुम्हारे पास आ जाऊँगा, जिससे पाण्डवों की संख्या पाँच-की-पाँच ही रह जाय। .. किन्तु मैं यह व्यर्थ कह रहा हूँ। जिसके रक्षक स्वयं कृष्ण हैं, उसका विनाश क्यों होगा?

//

विनीता कुमारी
22-04-2020

विनीता कुमारी
एसोसिएट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
डा. एल. के. वी. डी. कालेज, ताजपुर